कुछ मान्यताएं ऐसी होती हैं, जो समाज के विश्वास में घर बना लेती हैं और युग बीत जाने के बाद भी समाज न तो उनमें संशोधन करना चाहता है, न ही उनको एक समालोचक की भांति कसौटी पर कस कर परखना चाहता है। जबकि विद्वान पुरुष तो वह होता है, जो किसी भी बात के दोनों ही पक्षों पर निष्पक्षता से विचार करे तथा जो सत्य हो, उसे स्वीकारने के साथ-साथ उसकी न्यूनताओं को भी प्रकट करे।

समाज की ऐसी ही अनेक मान्यताओं में एक मान्यता यह भी है, कि नाथ पंथी साधक उग्र, हठीले, कठोर, बात-बात पर झगड़ने वाले और उद्दंड होते हैं। यदि समाज के सामान्य व्यक्ति से पूछिये, तो प्राय: वह नाथ पंथी साधकों और अघोरियों में भेद भी नहीं कर पाते और प्राय: उन्हें एक ही समझते हैं। यह एक नितान्त दु:ख की बात है, कि जिस सम्प्रदाय का प्रचलन गोरखनाथ जैसे युगपुरुष के माध्यम से हुआ, उसके विषय में कालान्तर में किन्हीं कारणोंवश ऐसी धारणाएं व्याप्त हो गईं, जबकि गुरु गोरखनाथ एवं परवर्ती नवनाथों द्वारा समाज के कल्याण के लिए जो कुछ भी किया गया, उसकी कोई समता ही नहीं की जा सकती।

कदाचित् कोई भी सम्प्रदाय अपने मूल रूप में जो होता है, वह कालान्तर में नहीं रह जाता, क्योंकि उनमें समय के अनुसार कई मान्यताएं, विचार एवं अन्यान्य पद्धतियां भी प्रविष्ट होती ही जाती हैं तथा शनै:-शनै: कोई भी पंथ व्यावहारिकता की ओर तथा सार्वजनिकता की ओर बढ़ने के आग्रह के कारण अपने मूल दर्शन एवं चिन्तन से कुछ प्रक्षिप्त हो ही जाता है।

अन्यान्य धर्म-दर्शनों की ही भांति नाथ सम्प्रदाय का भी एक वृहद व सुनिश्चित दर्शन तो रहा ही है, साथ ही इस पंथ में अद्वितीय साधक, चिन्तक, तपस्वी व मर्मज्ञ भी उत्पन्न हुए हैं। **ये साधक न केवल शिवत्व की ही अराधना करते थे, वरन शक्ति तत्त्व के महत्त्व को भी स्वीकार करते थे तथा इनका समन्वित स्वरूप अपने गुरु में स्वीकार कर सर्वोच्च महत्ता उन्हीं को देते थे।** इसी कारणवश नाथ पंथ में शक्ति साधना के भी प्रबल प्रमाण मिलते हैं तथा शिव साधना के भी।

गुरु साधना तो नाथ पंथ में सर्वोच्च है ही। संभवत: नाथ पंथ के श्रेष्ठ योगी अपने 'गुरु' के रूप में ही भगवान शिव के ही अर्द्धनारीश्वर स्वरूप की अभ्यर्थना करते हैं।

विडम्बना यह हो

गई कि उनके द्वारा रचित साबर मंत्रों की अटपटी भाषा से सर्वसाधारण ने यह निष्कर्ष लगाया, कि वे (अर्थात नाथ पंथी) कोई अल्पज्ञ, अटपटे व्यक्ति रहे होंगे, जो नशे में चूर होकर यूं ही कुछ बड़बड़ा देते होंगे और अंधविश्वास के कारण ग्रामीण जनता उनका विश्वास भी कर लेती होगी। कम से कम मैंने अपने शोध में एक आम व्यक्ति को इसी धारणा से युक्त देखा।

देवभाषा संस्कृत में न रचे होने के कारण विद्वान समाज ने भी इसके दुष्प्रचार में बढ़-चढ़ कर भाग लिया होगा, जिसके परिणाम स्वरूप हम उन अनेक दुर्लभ मंत्रों के ज्ञान से आज वञ्चित हैं, जो कि मूलत: किसी योगी या संन्यासी के अन्तर्द्वन्द्व के क्षणों में उद्भूत हुए होंगे।

मेरे प्रपितामह जो गोरखपुर जिले के एक क्षेत्र के ताल्लुकेदार थे, उन्हें अपनी सामन्ती परम्परा के प्रभाव में दरबार लगाने का बेहद शौक था और इतना ही नहीं, वे इसका विवरण भी तैयार करवाते रहते थे। कदाचित उन्हें यह आशा नहीं थी, कि कभी देश स्वतन्त्र भी होगा और वे अपने उत्तराधिकारियों के लिए अपने विरासत में अन्य वस्तुओं के साथ-साथ रोब-दाब और ठाट-बाट का इतिहास भी छोड़ जाना चाहते थे। यद्यपि उनकी आशा पूर्ण नहीं हुई। देश स्वतन्त्र हो गया, किन्तु उनका वह 'रोजनामचा' आज मेरे लिए किस प्रकार ज्ञान का भण्डार बनता है, मैं इसको शब्दों में नहीं बता सकता। अनेक लुप्त परम्पराओं, रीति-रिवाजों के वर्णन आदि के साथ ही साथ उसमें उन साधुओं का भी विवरण मिलता है, जो उनसे समय-समय पर मिले और उन्होंने अपना ज्ञान मेरे प्रपितामह को दिया।

अभी तक मेरे साथ समस्या यह थी, कि मेरे प्रपितामह ने अन्य विवरण तो रोजनामचे में दर्ज करवा रखे थे, जबकि मंत्रों आदि का विवरण एक अलग व्यक्तिगत डायरी जैसी पुस्तक में स्वयं अपने हाथ से लिखे थे। मैं इसी कारणवश समझ ही नहीं पाता था, कि कौन सा मंत्र किस साधना से सम्बन्धित है। मेरी इस समस्या का समाधान तब हुआ, जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव के सम्पर्क में आया और उन्हें समस्त विषय वस्तु दिखाई। लगभग छ: माह तक पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में जोधपुर में ही रह कर मैंने जिस प्रकार गहन निर्देशन एवं ज्ञान प्राप्त किया, उससे प्राय: मुझे यही लगता था, मानों गुरु गोरखनाथ ही इस रूप में आकर समस्त ज्ञान को पुनर्जीवित कर रहे हों।

इस समस्त शोध कार्य के सम्पूर्ण होने पर उन्होंने मुझे आज्ञा दी, कि इस ज्ञान का लाभ केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक ही न हो वरन सर्वसामान्य के लिए हो। उन्होंने एक प्रकार से गुरु दक्षिणा में केवल इतनी सी आज्ञा दी और पूज्यपाद गुरुदेव की इस आज्ञा को सम्पूर्ण करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

प्रस्तुत लेख में मैं विस्तृत शोध से केवल इतना ही स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा हूं, कि किस प्रकार नाथ पंथी साधु न केवल उच्चकोटि के शैव साधक ही थे, वरन शक्ति साधना के क्षेत्र में भी उनकी गति निर्बाध थी तथा जीवन की ऐसी अनेक समस्याएं, जिनका समाधान केवल शक्ति के आधार पर ही हो सकता है, उसकी उन्होंने कितनी सटीक व्याख्या एवं साधना विधि ढूंढ़ निकाली थी।

ऐसे ही अनेक उच्चकोटि के साधकों, योगियों, संन्यासियों के प्रयोगों के मध्य मैं 'विभूतिनाथ जी' के कुछ प्रयोग आगे प्रस्तुत कर रहा हूं, जो अपने समय के विख्यात नाथ पंथी योगी रहे हैं तथा गोरखपुर-नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में जिनकी महिमा अक्षुण्ण बनी रही।

मैं एक आवश्यक बात यहां उद्धृत करना चाहता हूं, कि आगे प्रस्तुत सभी प्रयोगों का नवरात्रि में विशेष महत्त्व है अर्थात इस काल में इन्हें सम्पन्न करने पर साधक को सामान्य से कई गुना अधिक फल प्राप्त हो सकता है। यद्यपि इन्हें किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भी सम्पन्न करने में कोई दोष नहीं है।

असह्य पीड़ाओं के निवारण हेतु

जीवन में ऐसी अनेक स्थितियां होती हैं जहां साधक किसी असह्य मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त होता है तथा उसके समाधान के लिए किसी दैवी बल की अपेक्षा करता है। ऐसी पीड़ाओं को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि यह तो व्यक्ति की क्षमताओं से सम्बन्धित बात है। जो स्थिति किसी एक के लिए सहज हो, वही दूसरे के लिए असह्य भी हो सकती है, किन्तु यह साधना प्रत्येक दशा में साधक को कुछ ऐसा अतिरिक्त बल प्रदान करती है, जिससे वह बिना किसी गम्भीर हानि के उस समस्या का निदान प्राप्त कर ही लेता है। एक प्रकार से यदि इसे आत्मबल की साधना कहें, तो अनुचित नहीं होगा।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास **'ताबीज रूप में काली यंत्र'** एवं **'काली हकीक माला'** होना आवश्यक है। इन दोनों अत्यावश्यक साधना सामग्रियों का रोग नाशक मंत्रों से सिद्ध होना आवश्यक है।

इस प्रयोग को पूरी नवरात्रि में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। यदि कोई चाहे, तो संकल्प कर इसे किसी दूसरे व्यक्ति के लिए भी सम्पन्न कर सकता है। यह रात्रि में किया जाने वाला प्रयोग है तथा साधक को गहरे नीले

रंग की धोती धारण कर किसी गहरे नीले रंग के आसन पर ही दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए। अन्य किसी विधि-विधान की विशेष आवश्यकता नहीं है। साधक तेल का दीपक लगाकर यंत्र के सम्मुख निम्न मंत्र की एक माला जप करें –

मंत्र

काली रात एक नदी वीर, सात समुद्र का जगमग तीर, कामाख्या रानी का गौरी पिण्डा, भैरवनाथ हरो सब पीरा, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा।।

यदि कोई गम्भीर संकट की अवस्था में हो, तो इसी प्रयोग को थोड़े से परिवर्तन के साथ करना लाभदायक रहता है। इसके लिए साधक को चाहिए, कि साधना के प्रारम्भ में ही हाथ में जल, कुछ काले तिल के दाने, चावल एवं पुष्प की पंखुड़ियों को लेकर संकल्प करें –

''मैं अमुक नाम नवरात्रि में अपनी अमुक प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिए काली साबर प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, अतः शीघ्रातिशीघ्र लाभ मिले।''

ऐसा कहकर वह यह सभी सामग्री किसी ताम्रपात्र में भरे जल में डाल दे तथा प्रत्येक बार के मंत्र उच्चारण के साथ ही साथ कुछ तिल के दाने उसी पात्र में डालता रहे। साधना की समाप्ति पर उस पात्र को स्वयं के सिर पर से घुमा कर घर से कुछ दूर दक्षिण दिशा में पात्र की सभी सामग्रियां फेंक आए।

इसी प्रयोग को किसी अन्य रोगी के लिए करते समय संकल्प में रोगी का भी नाम लें तथा अंत में सामग्रियां उसके सिर पर से घुमा कर फेंक दें।

साधना की समाप्ति पर यंत्र एवं माला को यथाशीघ्र घर से दूर कहीं फिंकवा दें। नवरात्रि में सम्पन्न किया जाने वाला यह काली साबर प्रयोग अपनी तीक्ष्णता में प्रमाण सिद्ध है।

न्यौछावर – 210/-

विघ्न बाधाओं के निवारण हेतु

जिस प्रकार पीड़ाओं को किसी निश्चित परिभाषा से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार विघ्न-बाधाओं की भी कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, केवल इतना ही कहा जा सकता है, कि जिन ज्ञात-अज्ञात कारणों से साधक अपने मानसिक, आत्मिक एवं भौतिक विकास में बाधा अनुभव करे, वे कारण ही विघ्न या बाधा होते हैं। प्रस्तुत प्रयोग इसी विशद 'परिभाषा' के अनुकूल जीवन की उन सभी विघ्न-बाधाओं की शांति करने में समर्थ है।

यह अपने आप में शत्रु नाशक प्रयोग भी है, जिसे नवरात्रि के सिद्ध मुहूर्त पर सम्पन्न किया जा सकता है। यह रात्रि में सम्पन्न किया जाने वाला प्रयोग है, जिसे पूरी नवरात्रि में कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रयोग हेतु साधक को गहरे लाल रंग की धोती धारण कर, गहरे लाल रंग के आसन पर दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए तथा अपने सम्मुख एक काला वस्त्र का टुकड़ा बिछा लें। इस वस्त्र के टुकड़े पर 'आठ बुन्दे' एक गोल घेरे में स्थापित करें, जो काली मंत्रों से चैतन्य हों। इस घेरे के मध्य में अपनी जो भी समस्या हो (अथवा शत्रु के नाम को) एक कागज पर लिख कर मोड़ कर रख दें तथा ऊपर से काले तिलों की एक छोटी सी ढेरी ऐसी बना दें, कि कागज का टुकड़ा दिखाई न दे। इस ढेरी के ऊपर 'दो गोमती चक्र' रखें तथा उन पर काजल का टीका लगाकर 'मूंगे की माला' से निम्न मंत्र की एक माला (108 बार उच्चारण) मंत्र जप करें। माला केवल मूंगे की होनी आवश्यक है–

मंत्र

झरझर बहे कपाल फटे, नाथ का बुंदा पांव पड़े, गोरख राज सत्य कहे, तिरिया का रूप वही धरे, शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा।।

मंत्र जप के काल में तेल का दीपक अवश्य लगा लें। अन्य किसी विधान की आवश्यकता नहीं है। यदि मंत्र जप के काल में भय की अनुभूति हो, तो विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। मंत्र जप के उपरान्त समस्त आठों बुन्दे घर से बाहर जाकर आठों दिशाओं में फेंक दें तथा माला व दोनों गोमती चक्रों को घर से कुछ हट कर भूमि में गाड़ दें। शेष सामग्री अर्थात तिल एवं कागज को जला दें। इन सभी कार्यों को यथासम्भव शीघ्रता पूर्वक ही सम्पन्न कर लें तथा इन्हें सम्पन्न करने के बाद स्नान कर लें। अपने अनुभवों को गुप्त रखें।

न्यौछावर – 280/-

धन के निश्चित आगमन हेतु

नवरात्रि का अवसर केवल तीक्ष्ण साधनाओं को ही सम्पन्न करने का अवसर नहीं होता, वरन जीवन के सभी पक्षों को नौ दिनों में सम्पन्न कर लेने का वर्ष का सिद्धतम मुहूर्त भी होता है।

धन की साधक के जीवन में क्या महत्ता होती है, इसको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं, भले ही साधक

संन्यासी ही क्यों न हो। **धन का निश्चित प्रवाह बने रहने से ही साधक मानसिक चिन्ताओं से मुक्त होकर अपनी साधनाओं को पूर्णता दे पाता है।** धन के निरन्तर प्रवाह बने रहने से ही वह आगे बढ़कर अनेक समाजोपयोगी कार्य कर पाता है, अपने गुरु के चरणों में उपस्थित हो उनकी आज्ञाओं, उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक बन पाता है तथा इस प्रकार से समाज में श्रेष्ठ और सम्मान का पात्र भी बन पाता है।

इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही साबर मंत्रों के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ साधना सृजित की गई है, जो कि मूलतः भद्रकाली पर आधारित है। यह विशिष्ट साधना मात्र धन की ही साधना नहीं है वरन त्रिगुणात्मक प्रभावों को प्रदान करने में समर्थ साधना है। इस साधना को साधक सम्पूर्ण **नवरात्रि में किसी भी दिन सुबह छः बजे से सात बजे के मध्य** सम्पन्न कर सकते हैं। इस साधना हेतु साधक को चाहिए, कि वह स्नान आदि कर पीले वस्त्र धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके स्थान ग्रहण करे। इसके पश्चात् पीले वस्त्र के टुकड़े पर निम्न प्रकार से यंत्र उत्कीर्ण करें। यंत्र का स्वरूप चित्र संख्या 1 में दर्शित किया गया है तथा अंकन के पश्चात उस पर चित्र संख्या 2 के अनुसार क्रमशः '**ललिता चक्र**', '**कमला चक्र**' एवं '**बगला चक्र**' स्थापित कर '**भद्रकाली गुटिका**' को भी स्थापित करें–
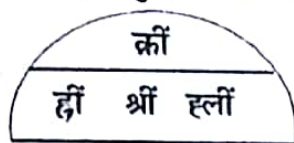
चित्र संख्या 1

चित्र संख्या 2

तदुपरान्त सभी चक्रों का पूजन कुंकुंम तथा अक्षत से कर भद्रकाली गुटिका का पूजन सिन्दूर से करें तथा '**श्वेताभ माला**' से निम्न मंत्र की मात्र एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें। मंत्र जप के काल में घी का दीपक अवश्य प्रज्वलित कर लें–

मंत्र

अनहद हद कुल नाथ कहत सुन, तीन पताका चौथी बिंदिया, सिंदूर की जागन पूरब की दिसिया, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरा तेरी वाचा।।

मंत्र जप के उपरान्त सभी साधना सामग्रियों को तथा जिस कपड़े पर यंत्र अंकित किया है, नदी में पवित्रता पूर्वक विसर्जित कर दें। निश्चित धन प्राप्ति के प्रवाह की इस साधना में विघ्न विनाशक तत्त्वों का भी समावेश है। **न्यौछावर – 300/-**

मानसिक शान्ति हेतु

साधना के क्षेत्र में उन्नति के इच्छुक साधकों के लिए यह आवश्यक है, कि वे प्रत्येक स्थिति में संतुलन बनाये रखें। शक्ति साधना के क्षेत्र में सक्रिय साधकों के लिए तो परम आवश्यक होता है, कि वे अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत प्रयोग इसी श्रेणी का मूलतः एक आध्यात्मिक प्रकृति का प्रयोग है, किन्तु इसका लाभ दैनिक जीवन में भी अनुभव किया ही जा सकता है।

किसी विशेष कारणवश सदैव तनावग्रस्त रहने वाले साधकों के लिए तो यह वरदान स्वरूप ही है। इस प्रयोग के फलस्वरूप साधक को अपनी अनेक समस्याओं के हल भी प्राप्त होते देखे गए हैं। वस्तुतः जो जितनी प्रबलता और जितने सघन विश्वास के साथ साधना में संयुक्त होता है, वही साधक एक ही साधना से विविध फल भी प्राप्त कर लेता है। यही साधना का रहस्य है।

किसी चमत्कार की आशा न रखने वाले किन्तु साधना में विश्वास रखने वाले श्रेष्ठ साधकों के जीवन में यह प्रयोग नवीनता लाएगा ही, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। साधक इस प्रयोग को **नवरात्रि के अतिरिक्त किसी सोमवार को भी** सम्पन्न कर सकते हैं। इसके लिए साधक के पास साबर मंत्रों से सिद्ध ऐसा शिवलिंग होना आवश्यक है, जो योनि मण्डल (या सामान्य बोलचाल की भाषा में अर्घे) से युक्त हो। यदि साधक इस प्रकार के '**सिद्ध शिवलिंग**' को प्राप्त कर सकें, तो अत्युत्तम माना गया है। इसके अतिरिक्त '**दो तांत्रोक्त फल**' इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री हैं। साधक श्वेत वस्त्र तथा आसन का प्रयोग करें व दिशा उत्तर हो। शिवलिंग को किसी ताम्रपात्र में स्थापित कर दोनों तांत्रोक्त फल उसके दोनों ओर स्थापित करें। इसके उपरान्त सभी का पूजन केवल कुंकुंम एवं अक्षत से करें तथा घी का दीपक जला कर निम्न मंत्र का 51 बार मंत्र जप करें –

मंत्र

छतरी का बाजा बजे, तिनक की भांग चढ़े, भैरव का बल बढ़े, गोरख की बात रहे, हलर हलर लहर लहर टिनक टिनक झिमक झिमक, चार के चार गोड़ दुई के माथे पड़े, सबद सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा।

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग व तांत्रोक्त फल नदी में विसर्जित कर दें। साधक यदि एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो भविष्य में अनेक तनावों से बचता हुआ परमशान्ति प्राप्त करता है। **न्यौछावर — 240/-**

सर्व कार्य सिद्धि हेतु

हो सकता है, कि आपके अनेक प्रयत्न करने पर भी आपको किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और प्रत्येक बार लक्ष्य के समीप जा कर भी आप पुन: उसी स्थान पर आ जाते हैं, जहां से आपने कार्य आरम्भ किया था। यह अनुभव एक बार का नहीं है, अपितु जीवन में ऐसी अनेक परिस्थितियां आती हैं, जब हमें एक सामान्य से कार्य को भी सम्पन्न करना अति दुष्कर प्रतीत होता है, अनेक प्रतिकूल स्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी अपने कार्यों को सम्पन्न करिये इस साबर प्रयोग से।

सफेद वस्त्र पर काजल से एक मानवाकृति बना कर उसके मध्य में '**सर्व कार्य सिद्धि गुटिका**' तथा उसके सिर पर, दोनों हाथों पर व दोनों पैरों पर एक-एक '**हमजाद**' स्थापित करें। गुटिका तथा प्रत्येक हमजाद का पूजन कर धूप लगायें तथा निम्न मंत्र का 25 बार उच्चारण करें —

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, सात समुद्र बिच किल्ला, सुलेमान पैगम्बर बैठा तख्त, सुलेमान पैगम्बर को चारि मुवक्किल — तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया। एक मुवक्किल पूरब गया, लाया देव-दानव को बांध। दूसरा मुवक्किल पश्चिम गया, लाया भूत-प्रेत को बांध। तीसरा मुवक्किल उत्तर को गया, उत्तपितृ को बांधि लाया। चौथा मुवक्किल दखिन को गया, डाकिनी-शाकिनी को बांध लाया। चार मुवक्किल चहुं दिशि ध्यावै, छल-छिद्र कछु रहे न पावै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। प्रयोग समाप्त होने पर सभी सामग्रियों को श्मशान में फेंक दें तथा घर आकर स्नान कर कार्य आरम्भ कर दें। **न्यौछावर — 275/-**

शत्रुओं के दमन हेतु

जब व्यक्ति उच्चता की ओर अग्रसर होता है, तो निश्चय ही उसके अनेक विरोधी उत्पन्न हो जाते हैं, जो व्यक्तित्व पर दाग लगाने और हानि पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विषय में बहुत अधिक सावधान रहना पड़ता है और यदि समय रहते उनका दमन नहीं किया जाय, तो उस व्यक्ति के सामने अनेक विपरीत परिस्थितियां खड़ी हो जाती हैं। अत: उन्नति के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए यह आवश्यक है, कि जीवन में आने वाले सभी शत्रुओं से रक्षा हो और वे कभी भी अपना सिर न उठा सकें।

काले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बना कर उसके तीनों सिरों पर एक-एक '**शत्रु दमन गुटिका**' स्थापित कर गुटिका का पूजन करें। फिर '**काली हकीक माला**' से निम्न मंत्र का पांच दिन तक नित्य 5 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

हनुमान पहलवान, बारह बरस का ज्वान। मुख में बीरा, हाथ में कमान। लोहे की लाठ, वज्र का कीला। जहं बैठे, तंह हनुमान हठीला। बाल रे, बाल राखो। सीस रे, सीस राखो। आगे जोगिनी राखो। पाछे नरसिंह राखो। जो कोई छल करे, कपट करे, तिनकी बुद्धि-मति बांधो। दोहाई हनुमान वीर की।

पांच दिन पश्चात् उसी वस्त्र में नमक की पांच डली रख कर माला और गुटिका के साथ बांध दें तथा उसे नदी के किनारे गड्ढा खोद कर दबा दें। **न्यौछावर — 260/-**

वशीकरण हेतु

वशीकरण का अर्थ है — जिसे हम अपने अनुकूल बनाना चाहते हैं, उसे पूरी तरह अपने वश में करना, जिससे कि वह तर्क-कुतर्क की परिधि से ऊपर उठ कर हमारा दास बन जाय और हमारी हर आज्ञा का आंख मूंद कर पालन करे।

शत्रुता को मित्रता में बदलने हेतु, उच्च अधिकारियों को अपने अनुकूल बनाने हेतु, पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों को मजबूत करने हेतु या ऐसी ही किसी अन्य कामना की पूर्ति हेतु यह प्रयोग शीघ्र प्रभावी है।

यह प्रयोग दो दिन का है। बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर केसर से उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिस

वश में करना है, उस नाम के ऊपर '**वशीकरण यंत्र**' स्थापित करें। उस यंत्र के चारों ओर कुल 7 काली मिर्च के दानें स्थापित करें। फिर काली मिर्च के प्रत्येक दाने पर अपना दाहिना हाथ रख कर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें —

मंत्र

ॐ मोसमोन सरोवर माहि पानी। जल की जोगणी, पाताल का नाग, जिसको लगाऊं उससे लाग। न सूता सुख, न बैठा सुख, फिर फिर देखे हमारा मुख। शब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र और काली मिर्च को दक्षिण दिशा की ओर निर्जन स्थान पर फेंक दें। न्यौछावर — 120/-

सर्वविध रक्षा के लिए

समय का कुछ पता नहीं होता, कब और किस क्षण क्या हो जाय, कुछ कहा नहीं जा सकता। आज के समाज में, जब चारों तरफ लूटमार मची हुई है, चोरियां, हत्याएं और दुर्घटनाएं बढ़ गई हैं, प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के नाम पर अनिश्चय की स्थिति में है। ऐसी विषम स्थिति में भी अब आप निश्चिन्त हो सकते हैं इस प्रयोग को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करके —

स्नान कर पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हो जायें तथा अपने बायें हाथ में '**साबर रक्षा गुटिका**' तथा दाहिने हाथ में आटे का दीपक ले लें। फिर गुटिका को देखते हुए निम्न मंत्र का 75 बार जप करें —

मंत्र

हनुमन्ता-गुणवन्ता, कुडली कपाट सें कमान। बैठे आलगट पागलट बांध। कनेरी का घाट। जल बांध, थल बांध, फिरती कैकण्ड बांध, आख्या बीर बांध। बावन कुय्या बांध, बावन मेस्का बांध। कौन बांधी, हनुमान वीर बांधी। ना बांधी, तो गुरु वस्ताद हनुमन्ता की आन। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ती। चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका और दीपक को नदी में प्रवाहित कर दें। न्यौछावर — 90/-

जो जितनी प्रबलता और जितने सघन विश्वास के साथ साधना में संयुक्त होता है, वही साधक एक ही साधना से विविध फल भी प्राप्त कर लेता है। यही साधना का रहस्य है।

भगवती जगदम्बा की कृपा हेतु

प्रत्येक साधक की यही इच्छा होती है, कि उसे अपने इष्ट का साक्षात्कार प्राप्त हो और वह इष्ट को अपने आपमें समाहित करता हुआ स्वयं उसके समान बन जाये। शाक्त साधनाओं को सम्पन्न करने के पीछे भी साधक का यही उद्देश्य होता है, कि वह मां भगवती जगदम्बा का साक्षात्कार प्राप्त कर उनकी कृपा सिन्धु में अपने आपको आप्लावित करता हुआ आध्यात्मिक और भौतिक उच्चता प्राप्त करता हुआ पूर्णता के पथ पर अग्रसर हो सके। उसकी यही इच्छा होती है, कि प्रेम, दया और करुणा की मूर्ति मां जगदम्बा उसे अपनी गोद में बिठा कर अपनी ममता का आंचल से उसे ढक ले और उसे जीवन की समस्त समस्याओं, बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति मिल जाय। यह प्रयोग इस दिशा में प्रत्येक साधक का एक सार्थक कदम होगा।

बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर केसर से अष्टदल कमल बनायें और उस पर '**दुर्गा यंत्र**' स्थापित कर पूजन करें। पूजन के पश्चात् यंत्र पर 21 बार निम्न मंत्र बोलते हुए 21 लाल पुष्प अर्पित करें —

मंत्र

॥ॐ ई इलि इलि हिलि हिलि
मिलि मिलि इल ॐ॥

OM EIM ELI ELI HILI HILI MILI MILI EAL OM

यह प्रयोग तीन दिन का है। प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र तथा सभी पुष्पों को नदी में प्रवाहित कर दें। न्यौछावर — 120/-

पूज्यपाद गुरुदेव की कृपा से स्पष्ट हो सके एक लुप्त ज्ञान के पुनर्प्रकाशन हेतु असीम आनन्द की अनुभूति हो रही है। वस्तुतः ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान का पुनर्जीवन आदि क्रियाएं होती तो उसी एक चैतन्य सत्ता से हैं, केवल युग के साथ-साथ वही सत्ता नये-नये स्वरूपों में आती रहती है। प्रस्तुति — विद्यापति